International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.1 Sept-Oct 2023

"रामचरितमानस" - पाक्षिक अध्ययन

Dr. Shobha. L
Assosiate Professor, Hindi Dep. M.S. Ramaiah college of Arts,Science and Commerce, Bengaluru-54.
Corresponding Author – Dr. Shobha. L
Email- shobhamsrcac@gmail.com.
DOI- 10.5281/zenodo.10156236

पुण्यं पापहरं सदाशिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ।
श्रीमद्रामचरितमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ॥

यह श्रीरामचरितमानस पुण्यरुप,पापों का हरण करने वाला, सदा कल्याणकारी,भक्ति,ज्ञान,विज्ञान तथा वैराग्य को प्रदान करनेवाला ,माया,मोह और मल का नाश करने वाला,परम निर्मल प्रेमरुपि जल से परिपूर्ण तथा मंगलमय लोककल्याणी है। भगवान श्रीराम के इस चरित्ररूपी सरोवर में जो भक्ति से आप्लावित होकर गोते लगाते हैं, वे मनुष्य जन्म-मरणरूपी सूर्य की भयंकर किरणों से नहीं जलते । समन्वय का तत्पर्य है संबंध ,संबंध का सुदृढीकरण ही समन्वय है । मानव समाज के लिए ये बहु मूल्य आधुनिक विज्ञान के पुर्वज अपने उन्नत उन प्रयासों को आधुनिक विज्ञान की संज्ञा भले ही न दीया हो किन्तु यह सत्य है कि 'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' की विज्ञान की परिभाषा "Science consists in knowing things."

"मानस" में गोस्वामि जी ने मात्र रामकथा ही नहीं कहीं है ,सदियों से दैन्य,भय,आतंक ,अन्याय में जीते आ रहे भारतीयों को और कोटि-कोटि मानव व्यथा को दूर करने के लिए यह वह कथा है जो समूची मानव समाज के लिए जो विज्ञान और अन्य परम्पराओं के बीच पँस कर दिशा हीन भटक रहे मानव कोटी के लिए एक सुन्दर मार्ग सूचि के रूप में उभर आया है -

विज्ञान के तीन मुख्य अंग है -

1. अवलोकन ।
2. प्रयोग ।
3. निष्कर्श ।

कोई भी साहित्य देश-काल की सीमा में आबद्ध नहीं होता । वह सार्वभौमिक और सार्वकालिक होता है। "मानस" एक ऐसा ही नैतिक ग्रन्थ है, जिसमें वैज्ञानिक तत्वों का भी विचार मिलता है जो युगों -युगों तक मार्ग-दर्शन करता रहेगा और जिसके कारण भारत सदा विशेष रूप से गौरवान्वित होता रहेगा।

भारत का विचार सर्व प्रथम कर्म के साथ-साथ धर्म के बल पर टिका है और कर्म को अत्यत श्रेष्ट माना गया है ।

तपबल रचई प्रपंचु विधात। तपबल बिष्नु सकल जग त्राता ॥
तपबल संभु करहिं संघारा । तपबल सेषु धरई महिभारा ॥
(बाल काण्ड .दोहा 72 चौ.2)

तप का अर्थ है अनवरत स्वार्थ रहित कर्म । जैसे ऊर्जा संसार के रचना, पोषण और संहार सभी सदैव कार्य रत रहते हैं । वैज्ञानिक तौर से सृष्टि में क्रिया दो प्रकार की होती है भौतिक और रासायनिक क्रिया । जिसका परिणाम नये परमाणु, अणु, यौगिक पदार्थों का निर्माण होता है और जिसके परिणाम से इस संसार का निर्माण होता है । कर्म की निरन्तरता ही सृष्टि का अधार भी है ।

ऊर्जा धारक भक्त और अभ्क्त के हृदय के अनुसार सम और विषम कर्म व्यवहार करते है । गुण रहित, निर्दोष, निर्लेप, मानरहित और सदा एकरस पंचभूत भगवान श्रीराम ने भक्त के कारण ही सगुण स्वरूप धारण किया है।

बिनु सतसंग विवेक न होई ।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥

सब कुछ जानने वाले,सबके हृदय में बसने वाले, सर्वरूपात्मक, सबसे रहित सबसे मिलित और सबसे उदासीन "राम" है ।

परमाणु के आधुनिक विश्लेषण से यह समझ में आसानी के साथ आता है कि इसके प्रमुख 3 मूल स्वरूप है - इलेक्ट्रान, प्रोटान एवं न्यूट्रान होते है । मानस में रसायन विज्ञान के अध्याय से विश्वबंधुत्व और समाजिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ है । जीव के उत्पत्ती को मानस में अत्यंत सरल रूप से दिखाया गया है । फिर भी समूचे सृष्टि के साथ पल-पल बहुत ही घनिष्टता के साथ जुडे हुए है । एक पल के लिए भी एक दूसरे के बिना पंच तत्व नहीं रह सकते हैं ।

गगन समीर अनल जल धरनी।
इन्ह कई नाथ सहज जड करनी ॥
छिति जल पावक गगन समीर ।
पंच रचित अति अधम सरीरा ॥

तुलसीदास जी को हर व्यक्ति को ज्ञानी बनाने की इच्छा है।

माया कृत गुन दोष अनेका ।
मोह मनोज आदि अबिबेका ॥
(उत्तराकाण्ड.दो.56.चौ/01)

माया रचित अनेक गुण-दोष,मोह,काम आदि अविवेक है । जैसा ऊपर भी स्पष्ट किया गया है माया जो ऊर्जा की चाहत के लिए होने वालि रासायनिक क्रियाओं का प्रतिरूप है । इससे रचित पदार्थों में आवश्यक गुण धर्म का धारण करते हैं जिनको विवेकाधीन रखा जाता है और आवश्यकतानुसार उपयोग किया जाता है । गोस्वामी जी ज्योतिष्य और खगोल के भी भरपूर मात्रा में अध्ययन कर के ज्ञान प्रप्त किया था । उसके अनुसार तारा सूरज,चाँद और तारा समूह ,पंच तत्व के साथ मनुकुल का क्या संबंध है और वह एक दूसरे से किस प्रकार ताल-मेल स्थापित करते हुए प्रकृति के साथ तादात्म्य रखते हुए संसार चक्र के नियमों का सही संतुलन बनाते हुए कार्य करते है इसका भी सटिक मार्गदर्शन करते है । तुलसी जी की कविता का सबसे प्रमुख स्वर आस्ठा और आत्मविश्वास का है । क्या केवट, क्या शबरी, क्या हनुमान क्या सुग्रीव, अंगद, नल-नील क्या रावण के भाई विभीषण सब का व्यवहार जीवनशैली विभिन्न होते हुए भी सार झिवन का व्यतिरूक्त होने पर भी संसार के जीवन चक्र में केवल सही, सच्चई और न्याय का ही विजय सुनिश्चित है जैसे प्रकृति कई प्रकार से भिन्न होने पर भी उसके विचार शुद्ध ही तो । "यह राम के मन की असीम करुणा है वे लक्ष्मण को याद दिलाते है कि है तात तुम यह न भूलना कि सुग्रीव मेरा सखा बन चुका है॥" अत एव उसे मारना नहीं भय दिखाकर सही रास्ते पे चलने मात्र का उपदेश देकर सुबुद्धी का संचार कर देना यही निस्पृह भावना राम में भी देखी जा सकती है । विजय के उपरान्त राम अयोध्या लौटने पर राज्याभिषेक के उपरान्त नागरिकों को संदेश देते हुए जीवन के सुन्दर तत्त्यों का वर्णन करते हुए कहते हैं -

"सुनहु सकल पुरजन मम बानी । कहहु न कछु ममता उर आनी ॥
नहिं अनीति नहिं प्रभुताई । सुनहु करहु जो तुम्हिंह सुहाई॥"

प्रस्तुत पंक्तिया यह कहती है कि किसी भी राज्य के नेता को न तो कोई अनीति की बात कहनी है और ना ही आदेशात्मक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए । जब आवश्यक है तब मात्र अधिकार का प्रयोग राजा को करना है । बाकी समय में प्यार और भाई चारे के संबंध से ही राजकाज करना है । लोगों को स्वतंत्र रूप से सोच ने का भी अवसर देना चहिए । किस कार्य से दुख: नाश होगा समाज का विकास होगा और देश का भला होगा यह विचार प्रजा के नए संकल्पि के साथ जहाँ राजा का भी सहयोग होना वह कार्य हमेशा सफ्ल रहेगा । राम ने जहां नैतिक शक्ति, धर्म-पथगामी, कर्तव्य-निष्ट और वैराग्य भाव का ज्ञान दिलाने मे सफ्ल थे । दूसरी और रावण का चरित्र का हनन जहां होगा वहां संहार का होना ही न्ययोचित है ।

'रावण रथी विरथ रघुवीर । देखी विभीषण हयहु अधीरा॥
नाथ न रथ ,नहिं तन पद त्राना । केहि विधि जितब वीर बलवाना ॥'

विभीषण डरते हुए कहते है कि आपके पास कोई भौतिक साधान नहीं है जिससे रावण की हार हो, पर राम एक ही विश्वास दिलाते है कि जहाँ धर्म है न्याय है वहाँ भौतिक बल की कोई आवश्यकता नहीं है।

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्यसील दृढ ध्वजा पताका ॥
बल विब्रक दम परहित धोरे । छमा कृपा समता रजु जोरे ॥
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा। एहि सम विजय उपाय न दूजा ॥
सख धर्म-मय अस रथ जाके । जी तन कहूँ कतहुँ रिपु ताकै ॥

कितना सरल और सुंदर रुप से राम विश्वास के साथ बताते है कि डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।

निष्कर्ष :-

तुलसीदास जी अपने चरित्रों में मानव जीवन को प्रेरण प्रदान करनेवाले ऐसे अनेक उदाहरणों को प्रस्तुत करते हुए सारे चरित्र अपने चित्रण में प्रतिध्वनित करते हुए दिखते हैं । इन्ही विचारों से ओत-प्रोत "मानस" हर युग के लिए प्रासंगिक भी है । वह विश्व के लिए सन्तप्त जीवन को शीतलता और पथ प्रदर्शित करते हुए भारत की भक्तिपूर्ण भक्त समुदाय के गले का कंठहार भी है ।

वह भक्तों के लिए निष्काम भक्ति, ज्ञानियों के लिए ज्ञान तथा कर्म योगियों के लिए कर्तव्य-कर्म का पाठ पढाती है ।

हृदय सिन्धु मति सीप समाना । स्वाति सारदा कहहिं बखाना ॥
जो बरसाइ बर वारि विचरु । होहिं कवित मुक्तामनि चारु ॥

आधार ग्रन्थ:

1. तुलसी-सम्पादक-राममूर्ति त्रिपाठी।
2. श्रीरामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास।
3. युगपुरुष तुलसी - आचर्य सोहनलाल रामरंग।
4. तुलसी दोहावली - डा.राघव रघु ।